भोपाल संभाग में आयुर्वेद पुस्तकालयों में इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधन: एक महत्वपूर्ण अध्ययन

प्राची सिंह*, अश्वनी यादव

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, सैम ग्लोबल विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश

सारांश:-

आज की तकनीकी रूप से उन्नत दुनिया में, हमारे समाज को सूचना-आधारित समाज के रूप में संदर्भित करना उचित है, और इस वर्तमान युग को उपयुक्त रूप से "सूचना का युग" कहा जा सकता है। एक प्रसिद्ध विद्वान, डॉ. एस.आर.रंगनाथन, आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकालयों के महत्व को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं, यह कहते हुए कि वे किसी भी शैक्षणिक संस्थान के हृदय के रूप में कार्य करते हैं, वह स्रोत हैं जहाँ से सभी गतिविधियाँ और पहल होती हैं, और जहाँ से ज्ञान प्राप्त होता है। और प्रेरणा प्रसारित होती है। भारत के कोल्हापुर जिले में आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज पुस्तकालयों के विशिष्ट डोमेन पर प्रकाश डालते हुए, "भोपाल संभाग" में आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज पुस्तकालयों में वर्तमान रुझान: एक अध्ययन" शीर्षक वाले शोध कार्य का उद्देश्य इन पुस्तकालयों की वृद्धि और उन्नति में योगदान करना है, पहचानना देश के शैक्षणिक और सामाजिक ताने-बाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

मुख्यशब्द:- शिक्षा, अनुसंधान, पुस्तकालय संग्रह, डिजिटल बुनियादी ढांचा, अंतरपुस्तकालयी चुनौतियां।

प्रस्तावना:-

प्रौद्योगिकी में प्रगति और सूचना की प्रचुरता ने ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों, विशेषकर आयुर्वेदिक चिकित्सा विज्ञान पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। यह प्रभाव चिकित्सा पेशेवरों, चिकित्सकों और छात्रों द्वारा अपने शोध और रोगी देखभाल में महसूस किया गया है। सटीक जानकारी से अद्यतन रहने के लिए, आयुर्वेदिक चिकित्सा पेशेवर पुस्तकालयों पर बहुत अधिक भरोसा करते हैं। हालाँकि, बजट की कमी और पत्रिकाओं और पुस्तकों की बढ़ती लागत के कारण, पुस्तकालय अपने उपयोगकर्ताओं की जरूरतों को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए भागीदारी बनाने के लिए मजबूर हैं। चिकित्सा शिक्षा का लक्ष्य योग्य चिकित्सा पेशेवरों को तैयार करना है, जो अपने संबंधित देशों की जरूरतों को पूरा कर सकें। अकेले मध्य प्रदेश राज्य में, हजारों चिकित्सा पेशेवर तैयार होते हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि पुस्तकालय इस विशाल जनशक्ति के लिए ज्ञान के प्राथमिक स्रोत के रूप में कार्य करते हैं। मेडिकल कॉलेज पुस्तकालय विभिन्न स्वास्थ्य

कल्याण कार्यक्रमों (वोमबोह, बी.एस.एच. 2008) के माध्यम से चिकित्सा शिक्षा को बढ़ावा देने और प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से स्वास्थ्य देखभाल जानकारी प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य:-

1. भोपाल संभाग के आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज पुस्तकालयों में पुस्तकालय सेवाओं की वर्तमान स्थिति की जांच करना।
2. भोपाल संभाग के के आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज पुस्तकालयों में पुस्तकालय संसाधनों की स्थिति की जांच करना।
3. आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज पुस्तकालयों की मानव और अन्य बुनियादी सुविधाओं की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना
4. भोपाल संभाग के आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज पुस्तकालयों में एलटी बुनियादी सुविधाओं की स्थिति के साथ-साथ पुस्तकालय संचालन और सेवाओं में स्वचालन की स्थिति का पता लगाना।

अनुसंधान क्रियाविधि:-

अध्ययन में डेटा इकट्ठा करने के लिए प्रश्नावली-आधारित सर्वेक्षण और केस अध्ययन दृष्टिकोण दोनों का उपयोग किया गया। डेटा सर्वेक्षणों के माध्यम से एकत्र किया गया था जिसमें अच्छी तरह से संरचित प्रश्नावली और व्यक्तिगत साक्षात्कार शामिल थे। इसके अतिरिक्त, शोध कार्य से संबंधित विभिन्न विषयों पर व्यापक शोध किया गया, जिसमें प्रासंगिक साहित्य का गहन विश्लेषण भी शामिल था। व्यापक जानकारी सुनिश्चित करने के लिए, गहन खोज की गई और विभिन्न अन्य स्रोतों की भी समीक्षा की गई।
आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज, उस कॉलेज के रूप में भी जाना जाता है जो बैचलर ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी (बी.ए.एम.एस.) में पाठ्यक्रम प्रदान करता है, साथ ही एम.डी./एम.एस जैसी स्नातकोत्तर डिग्री और एम.फिल/पीएचडी में अनुसंधान कार्यक्रम भी प्रदान करता है।, अपनी शैक्षिक पेशकशों के लिए अत्यधिक सम्मानित है। ये पाठ्यक्रम विशेष रूप से भोपाल संभाग में स्थित आयुर्वेद मेडिकल कॉलेजों में उपलब्ध हैं। जानकारी इकट्ठा करने और अनुसंधान करने के लिए, क्षेत्र के सभी आयुर्वेद मेडिकल कॉलेजों के पुस्तकालयों में प्रश्नावली वितरित की गईं।

परिणाम:

शासकीय कॉलेज स्थापना का वर्ष:-

क्रमांक	वर्ष	महाविद्यालय की संख्या
01	1900-1930	0
02	1931-1970	0
03	1971-2020	1

तालिका-1

निजी कॉलेज स्थापना का वर्ष:-

क्रमांक	वर्ष	महाविद्यालय की संख्या
01	1900-1930	0
02	1931-1970	0
03	1971-2020	16

तालिका-2

पाठ्यक्रम:-

क्रमांक	पाठ्यक्रम	महाविद्यालयों की संख्या
1	स्नातक	17
2	स्नात्कोत्तर	7

तालिका-3

तालिका-3 में सभी कॉलेज स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, जबकि उनमें से केवल सात ही स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।

पुस्तकालय संग्रह:-

शोध में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में संग्रह पहलू की गहन जांच करने के लिए, प्रतिभागियों से पुस्तकालयों में मौजूद विभिन्न प्रकार की सामग्रियों के बारे में पूछताछ की गई। ऐसा स्पष्ट समझ सुनिश्चित करने और ठोस सबूत उपलब्ध कराने के लिए किया गया था। इन पुस्तकालयों में संग्रह को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया था: किताबें और गैर-पुस्तक सामग्री। फिर प्राप्त डेटा को एक ग्राफ़ के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिसमें संबंधित परिणामों के साथ पुस्तकों और ई-पुस्तक सामग्री को दर्शाया गया।

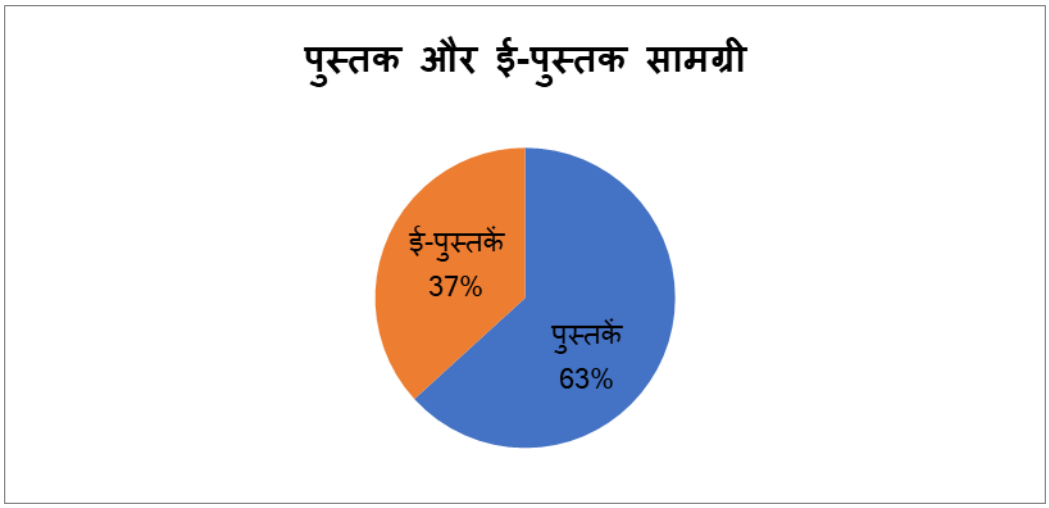

पुस्तकालय सेवाएं:-

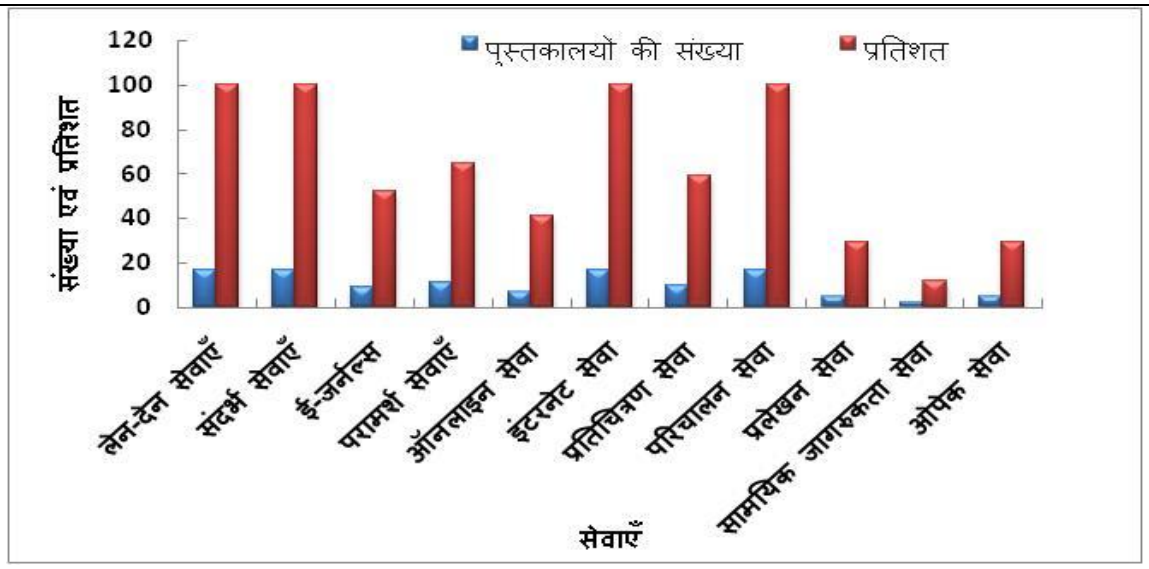

सेवाएँ	पुस्तकालयों की संख्या	प्रतिशत (%)
लेन-देन सेवाएँ	17	100
संदर्भ सेवा	17	100
ई-जर्नल्स	9	52.2
परामर्श सेवा	11	64.7
ऑनलाइन सेवा	7	41.1
इंटरनेट सेवा	17	100
प्रतिचित्रण सेवा	10	58.8
परिचालन सेवा	17	100
प्रलेखन सेवा	5	29.41
सामयिक जागरुकता सेवा	2	11.7
ओपेक सेवा	5	29.41

तालिका-4

इन पुस्तकालयों का व्यक्तिगत दौरा करने पर, यह देखा गया कि उनके द्वारा दी जाने वाली प्राथमिक सेवा उधार देना है, जिनमें से अधिकांश द्वारा आरक्षित सेवाओं का अतिरिक्त प्रावधान किया जाता है। उल्लेखनीय है कि इनमें से अधिकांश पुस्तकालय खुली पहुंच के आधार पर संचालित होते हैं। फिर भी, तालिका 4 का गहन विश्लेषण अधिक जानकारी प्रदान करता है।

पुस्तकालय स्वचालन:-

सूचना प्रौद्योगिकी की शक्ति का दोहन शुरू करने के लिए, प्रारंभिक और महत्वपूर्ण कदम पुस्तकालयों के भीतर विभिन्न गतिविधियों को स्वचालित करना है। इसे ध्यान में रखते हुए, पुस्तकालयाध्यक्षों से संपर्क किया गया और उनके संबंधित पुस्तकालयों में लागू स्वचालन के वर्तमान स्तर के बारे में पूछताछ की गई।

इन पुस्तकालयाध्यक्षों द्वारा साझा की गई मूल्यवान अंतर्दृष्टि और राय को उनकी घटना की आवृत्ति के आधार पर सावधानीपूर्वक दर्ज और वर्गीकृत किया गया था।

स्वचालन स्तर	**पुस्तकालयों की संख्या**	**प्रतिशत**
पूर्ण रूप से स्वचालित	4	23.5
आंशिक रूप से	7	41.1
प्रस्तावित	4	23.5
विचाराधीन	2	11.76
कुल	**17**	**100**
तालिका-5		

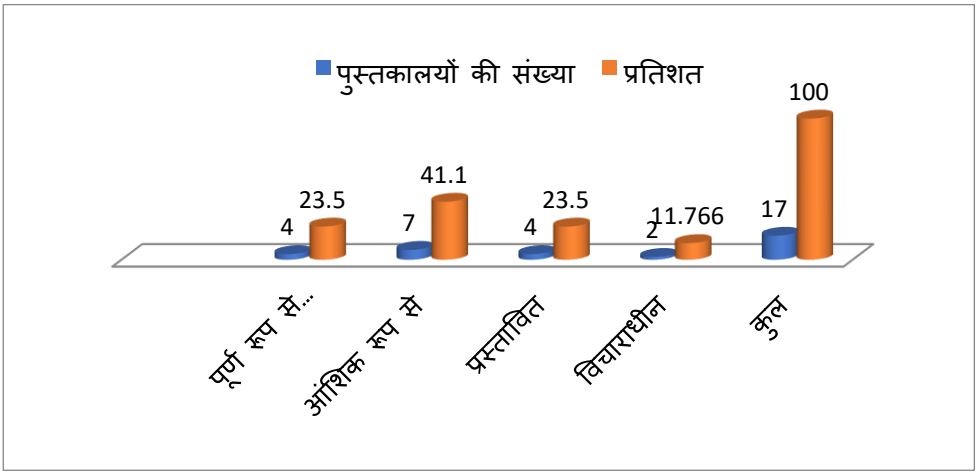

ग्राफ़ 5 में पूरी तरह से स्वचालित पुस्तकालयों, आंशिक रूप से स्वचालित पुस्तकालयों और प्रस्तावित स्वचालित पुस्तकालयों के बीच प्रतिशत अंतर की तुलना है। इससे पता चलता है कि पुस्तकालयों के स्वचालित होने की सीमा में काफी अंतर है। इसके अतिरिक्त, उपरोक्त तालिका इस बात का प्रमाण देती है कि भोपाल में आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज पुस्तकालयों ने अपनी पुस्तकालय सेवाओं को शुरू करने में महत्वपूर्ण देरी का अनुभव किया है।

निष्कर्ष:-

सेंट्रल काउंसिल ऑफ इंडियन मेडिसिन (सीसीआईएम), एक सरकारी निकाय, वर्तमान में मध्य प्रदेश में आयुर्वेद शिक्षा प्रणाली की देखरेख करती है। यह प्रणाली एक विनम्र चिकित्सा दृष्टिकोण में निहित है और सिर्फ एक औषधीय प्रणाली होने से कहीं आगे जाती है - यह जीवन का एक तरीका है। कुछ कॉलेज एम.फिल/पीएचडी भी प्रदान करते हैं। कार्यक्रम, आयुर्वेद शिक्षा में पेश किए गए पाठ्यक्रम की गहराई और चौड़ाई को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त, आयुर्वेद कॉलेजों में अच्छी तरह से भंडारित पुस्तकालयों के रूप में विभिन्न शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता छात्रों और संकाय दोनों के लिए शैक्षिक अनुभव को और बढ़ाती है। ये पुस्तकालय वर्तमान पत्रिकाओं, शोध रिपोर्ट, थीसिस और शोध प्रबंध, और सम्मेलन की कार्यवाही जैसी

सामग्रियों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंच प्रदान करते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि इस क्षेत्र में स्वास्थ्य विज्ञान पेशेवरों की शिक्षा का समर्थन करने के लिए उपलब्ध संसाधन व्यापक हैं और अन्य चिकित्सा विषयों में पाए जाने वाले संसाधनों से कहीं बेहतर हैं।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. G, Rathinasabapathy.(2005). A study on the problems with online healthcare information resources: Application and operation Standards for Health Science Libraries in Digital Era. Bangalore, National Convention of Medical Library Association. Programme Documents.
2. एमसीआई (मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली) http://www.mciindia.org.
3. डेविस, एफ.डी., "कथित उपयोगिता, उपयोग में आसानी, और सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगकर्ता स्वीकृति", एमआईएस क्वार्टरली, वॉल्यूम। 13 (3), पीपी. 319-339, 1989.
4. सिन्हा, एम.के. और जय चींटी भट्टाचाईजी, जे., "खुली पहुंच के लिए भारत में डिजिटल लाइब्रेरी पहल: एक अवलोकन", चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, गुलबर्गा में प्रस्तुत पेपर, 2-4 फरवरी, 2006.
5. “नावेद और निशात”(2009) सामाजिक क्षेत्र में अनुसंधान के लिए आईसीटी उत्पादों और सेवाओं का उपयोग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी के डेसीडॉक बुलेटिन, 29(2): 25-30.
6. .“वर्मा, एम.के”.(2015)। डिजिटल वातावरण में पुस्तकालय पेशेवर की बदलती भूमिका: एक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लाइब्रेरी साइंस, 13(2), 96 -104.